eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 02, Issue 12, December 2023

वैश्वीकरण के दौर में कार्यरत महिलाओं की प्रस्थिति एवं भूमिका का निर्वहन एवं समायोजन–एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

[1]प्रतिभा भास्कर
[1]शोधार्थिनी, (समाज कार्य विभाग), बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी, उ०प्र०

Received: 25 November 2023 Accepted and Reviewed: 25 November 2023, Published : 01 Dec 2023

Abstract

वैश्वीकरण पूरे विश्व में एक ऐसी जटिल प्रक्रिया के रूप में सामने आया जिसने बिखरे हुए विश्व को एक सूत्र में पिरो दिया, जिसने विभिन्न देशों की दूरियों को मिटा दिया। इसमें उच्च प्रौद्योगिकी के स्थानांतरण के साथ आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक जीवन में व्यापक एवं तीव्रगामी परिवर्तन परिलक्षित होते हैं जो पूरे समाज पर प्रभाव डालते हैं। वैश्वीकरण के द्वारा परंपरागत भारतीय महिलाओं की प्रस्थिति एवं भूमिका पर व्यापक प्रभाव पड़ा, जहां उनका जीवन घर की जिम्मेदारी, बच्चों के पालन पोषण और धार्मिक रीति–रिवाजों को पूरा करने में निकल जाता था वहीं वैश्वीकरण ने देश की अर्थव्यवस्था को नए आयाम दिए जिसमें महिलाओं को आगे बढ़ाने के नए अवसर उपलब्ध हुए, महिलाएं घर की चारदीवारी से निकलकर शिक्षत होकर विभिन्न पदों पर कार्य करते हुए अपनी जिम्मेदारी को निभा रहीं हैं। वैश्वीकरण में कार्यरत महिलाओं की परिस्थितियों और उनकी भूमिकाओं में बदलाव हुआ है, वह अपनी परंपरागत भूमिका को निभा रही हैं और साथ ही नई परिस्थितियों में अपने आपको ढाल भी रहीं हैं, उन्हें अपनी कुछ भूमिकाओं को छोड़कर आगे बढ़ना पड़ रहा है जिससे वह समाज में अपनी नई जिम्मेदारियां को निभा सकें। अपनी इस नई परिस्थिति और भूमिका के द्वंद से निकालकर महिलाएं अनेक क्षेत्रों में अपना नाम रोशन कर रही है और आने वाली पीढियां के लिए एक मिशाल पेश कर रही हैं।

मुख्य शब्द– वैश्वीकरण, महिला, प्रस्थिति, भूमिका, कार्यरत, तकनीकी, प्रौधौगिकी।

Introduction

वैश्वीकरण एक ऐसी प्रकिया है जिसके द्वारा प्रारम्भ में विभिन्न राष्ट्र के बाजार और उत्पादन की वस्तुएं पारस्परिक रूप से आदान–प्रादान पर आधारित थी और इसका क्षेत्र बहुत सीमित था लेकिन वर्तमान की बात की जाये तो वैश्वीकरण में व्यापकता आ गयी इसका प्रभाव अब केवल व्यापार तक सीमित न होकर किसी भी देश के आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक पर पड़ने वाले प्रभाव पर स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है कहने तात्पर्य यह कि वैश्वीकरण ने समय और स्थान को बहुत सूक्ष्म कर दिया है जिससे विश्व में घटने वाली आर्थिक, प्रौधौगिकी, व्यापारिक महत्वपूर्ण घटनायें दुसरे देशों पर भी बहुत अधिक प्रभाव डालती है। वैश्वीकरण की एक वैचारिक क्रांति में विश्व के प्रत्येक देशों की सामाजिक, सांस्कृतिक मान्यताओं को प्रभावित किया और आर्थिक व रोजगार के स्तरों पर अनेक अवसर प्रदान किये जिससे महिलाएं भी शिक्षित और जागरूक होकर घर की चारदीवारी से निकलकर पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाती हुई सरकारी नौकरियों से लेकर मल्टीनेशनल कम्पनियों में कार्यरत होकर अपनी भूमिकाओं का निर्वहन कर रही है। वह आधा समाज जो देश की

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 02, Issue 12, December 2023

प्रगति में पीछे छुटा जा रहा था वैश्वीकरण के फलस्वरूप विभिन्न पदों पर कार्यरत होकर देश के निर्माण में अपनी भूमिका निभा रही है। प्रस्थिति एवं भूमिका समाज में प्रत्येक व्यक्ति का निश्चित रूप से अपना एक पद होता है, यह पद किसी को विरासत में मिल जाता है तो किसी को अपनी योग्यता, क्षमता से मिलता है, प्रत्येक व्यक्ति प्रस्थिति के अनुरूप ही भूमिका का निर्वाहन करता है।

परम्परागत भारतीय समाज में महिलाओं की प्राथमिक भूमिका के रूप में गृहकार्य, प्रजनन, बच्चों की देखभाल करने तक ही सीमित था। गृहकार्य केवल महिलाओं दुवारा ही सम्पन्न किये जाते थे उन के द्वारा किये गए कार्य का कोई वेतन नहीं दिया जाता था वे आर्थिक रूप से पूर्णता परिवार पर निर्भर रहती थीं और साथ ही परिवार में वित्तीय निर्णय लेने की स्वतंत्रता नहीं थी। वैश्वीकरण के दौर में आज महिलाएं अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हो गई हैं। परिवहन एवं संचार के साधनों नें विभिन्न देशों की दूरियां को बहुत कम कर दिया है आज किसी भी देश में प्रौधौगिकी एवं तकनीकी में जो सुधार हो रहे हैं वे बहुत कम समय में दुनिया के अधिकांश देशों तक पहुंचाए जा रहे हैं, जैसे कुछ वर्ष पहले इंटरनेट से बहुत कम लोग परिचित थे, लेकिन बहुत कम समय में ही दुनिया के विभिन्न देशों में प्रयोग होने लगा है। परिवहन एवं संचार माध्यमों के तीव्र विकास से महिलाओं में जागरूकता आई है आज महिलाओं ने अपने विकास के विभिन्न समितियां भी बना ली हैं। महिलाएं हर क्षेत्र में पुरुषों के साथ–साथ काम कर रही हैं। भारतीय महिलाओं ने विश्व में अपनी अलग जगह बनायी है। भारत की पहली महिला पुलिस अफसर डॉ. किरन वेदी, भारतीय मूल की वैज्ञानिक सुनीता विलियम्स अन्तरिक्ष तक पहुंची राष्ट्रपति के पद पर आसीन श्रीमती द्रोपदी मुर्मू, भारतीय मूल की अमेरिका की उप राष्ट्रपति कमलाहेरिस ने साबित कर दिया कि महिलाएं अब उच्चपदों को प्राप्त कर सकती हैं। समकालीन परिप्रेक्ष्य में महिलाओं ने अपनी योग्यता और बुद्धिमत्ता से प्रस्थिति के अनुसार भूमिका निर्वाहन बेहतर ढ़ंग से कर रहीं हैं। समकालीन समाज में तकनीकी और प्रौधौगिकी विकास के बाद महिलाओं ने प्रगति की है। महिलायें अपने विवेक और कुशलता से समाज के सभी क्षेत्रों में विशेष स्थान प्राप्त किया फिर चाहे वह कृषि हो सामाजिक कार्य, वित्तीय, बीमा, व्यापार, कारखाने, शिक्षा, बैकिंग, चिकित्सा। महिलाओं को अपने परिवार एवं रोजगार के मध्य अपने आपको समायोजित करना पड़ता है। कार्यरत महिलाओं को दोनों भूमिकाओं को कुशलतापूर्वक निभाना पड़ता है जिसके कारण महिलाओं के लिए दोहरी भूमिका, संघर्ष की समस्या उत्पन्न होती है जिसका प्रभाव पारिवारिक सम्बन्धों और बच्चों की देखभाल पर पड़ता है। प्रभावशाली व्यक्तित्व वाली महिलाएं भूमिका निर्वाह बेहतर ढ़ंग से करती हैं। सरल व नम्र स्वभाव वाली महिलाओं को भूमिका निर्वाह करने में अधिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। कार्यरत महिलाओं को पारिवारिक जीवन और दफ्तर की दिनचर्या के बीच सामंजस्य स्थापित करना पड़ता है। महिलाओं का सबसे महत्वपूर्ण सम्वेदनात्मक और भावनात्मक रिश्ता अपने बच्चों से होता है उनकी सबसे बड़ी जिम्मेदारी होती है लेकिन कार्यरत महिलायें अपने बच्चों को पर्याप्त समय नहीं दे पाती है जिससे उनके बच्चे चिडचिडे और जिद्दी हो जाते हैं।

कार्यरत महिलाओं की दोहरी भूमिका का निर्वहन् एवं समायोजन–

कार्यरत महिलाओं को अपने परिवार एवं रोजगार के मध्य अपने आपको समायोजित करना पड़ता है। कार्यरत महिलाओं को दोनों भूमिकाओं को कुशलतापूर्वक निभाना पड़ता है जिसके कारण

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 02, Issue 12, December 2023

महिलाओं के लिए दोहरी भूमिका, संघर्ष की समस्या उत्पन्न होती है जिसका प्रभाव पारिवारिक सम्बन्धों और बच्चों की देखभाल पर पड़ता है। प्रभावशाली व्यक्तित्व वाली महिलाएं भूमिका निर्वाह बेहतर ढ़ंग से करती हैं। सरल व नम्र स्वभाव वाली महिलाओं को भूमिका निर्वाह करने में अधिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। कार्यरत महिलाओं को पारिवारिक जीवन और दफ्तर की दिनचर्या के बीच सामंजस्य स्थापित करना पड़ता है। रामू (1989) के मतानुसार– ''नवीन आर्थिक व घरेलू भूमिकाओं के बीच संघर्ष का फल महिलाओं के कार्यकलापों के विभागीकरण के रूप में होता है क्योंकि व्यवसाय व गृहस्थ जीवन के बीच प्रतिस्पर्धा की मांग होती है कि वे इसके साथ समन्वय करें, किंतु अनेक महिलाओं के लिए यह असंभव सा ही प्रतीत होता है। कुछ समय के बाद वे भी अनुभव करतीं हैं कि या तो अपने व्यवसायिक कार्यों को महत्व दें या पारिवारिक दायित्वों में कुछ कटौती करें।" लार्जान्स 1961 के अनुसार– 'समायोजन दर्शाने के चार प्रमुख सूचक हैं– भूमिकाओं का कुशल व बुद्धिमत्तापूर्ण निर्वाह, मनोवैज्ञानिक सुख की सीमा, तनाव लक्षणों का अभाव तथा व्यवहार की सामाजिक स्वीकृति'। वर्ष 1991 की जनगणना के अनुसार–शहरों और गांवों में घर की चारदीवारी में रहने वाली महिलाएं बाहर निकल कर काम करने लगी हैं। वर्ष 1971 में 13 प्रतिशत महिला श्रमिक कार्यरत थीं। यह प्रतिशत 1981 में बढ़कर 25.89 और 1991 में 28.57 हो गया। लगभग 80 प्रतिशत महिलाएं कृषि कार्यों में लगी हैं। प्रतिशत महिलाएं केन्द्रीय व राज्य प्रशासनिक सेवाओं में और सार्वजनिक प्रतिष्ठानों में कार्यरत हैं।

तालिका

आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण के अनुसार भारत में रोजगार की स्थिति

दरें	ग्रामीण			शहरी			ग्रामीण और शहरी		
	पुरूष	महिला	व्यक्ति	पुरूष	महिला	व्यक्ति	पुरूष	महिला	व्यक्ति
पीएलएफएस 2020-21									
एलएफपीआर	57.1	27.7	42.7	58.4	18.6	38.9	57.5	25.1	41.6
डब्ल्यूपीआर	54.1	27.1	41.3	54.9	17.0	36.3	54.9	24.2	38.8
यूआर	3.9	2.1	3.3	6.1	8.6	6.7	4.5	3.5	4.2
पीएलएफएस 2019-20									
एलएफपीआर	56.3	24.7	40.8	57.8	18.5	36.8	56.8	22.8	40.1
डब्ल्यूपीआर	53.8	24.0	39.2	54.1	16.8	35.9	53.9	21.8	38.2
यूआर	54.5	2.6	5.0	4.0	8.9	7.0	5.1	4.2	4.8
पीएलएफएस 2018-19									

एलएफपीआर	55.1	19.7	37.7	56.7	16.1	36.9	55.6	18.6	37.5
डब्ल्यूपीआर	52.1	19.0	35.8	52.7	14.5	34.1	52.3	17.6	35.3
यूआर	5.6	3.5	5.0	7.1	9.9	7.7	6.0	5.2	5.8
पीएलएफएस 2017-18									
एलएफपीआर	54.9	18.2	37.0	57.0	15.9	36.8	55.5	17.5	36.9
डब्ल्यूपीआर	51.7	17.5	35.0	53.0	14.2	33.9	52.1	16.5	34.7
यूआर	5.8	3.8	5.3	7.1	10.8	7.8	6.2	5.7	6.1

स्रोत: https://pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=1834404[1]

एलएफपीआरः कुल जनसंख्या में श्रम बल में आने वाले व्यक्तियों (कहीं कार्यरत या काम की तलाश या काम के लिए उपलब्ध) की संख्या।

- डब्ल्यूपीआरः कुल जनसंख्या में रोजगार प्राप्त व्यक्तियों का प्रतिशत।
- यूआरः श्रम बल में शामिल कुल जनसंख्या में बेरोजगार व्यक्तियों का प्रतिशत।

वैश्वीकरण के प्रभाव से महिलाओं की सभी क्षेत्रों में प्रगति हो रही है। वर्तमान में महिलाएं पुरुषों के समान सभी क्षेत्रों में काम भी कर रही हैं। वैश्वीकरण का ही प्रभाव है कि महिलाओं को शिक्षा और रोजगार आदि के समान अवसर प्राप्त हुये हैं। लगभग सभी क्षेत्रों में महिलाओं का नियोजन किया जा रहा है। ऐसे क्षेत्रों में भी महिलाओं को नियोजित होने का अवसर मिल रहा हैं जिन्हें कुछ समय तक सिर्फ पुरूषों के लिए ही आरक्षित रखा गया था, जैसे– सेना में कमीशन मिलना, फाइटर प्लेन चलाना आदि। शैक्षिक क्षेत्र में तो महिलाओं को बड़ी संख्या में नियोजित होने के अवसर मिल रहे हैं। बैंकिंग क्षेत्र भी महिलाओं के लिए अधिक अनुकूल है।

उददेश्य–

- वैश्वीकरण के दौर में कार्यरत महिलाओं की प्रस्थिति एवं भूमिका का अध्ययन करना।
- वैश्वीकरण के दौर में कार्यरत महिलाओं की पारिवरिक भूमिका का अध्ययन करना।
- वैश्वीकरण के दौर में कार्यरत महिलाओं के साथ कार्यस्थल पर दुर्व्यवहार होने पर प्रतिक्रिया का अध्ययन करना।
- वैश्वीकरण के दौर में कार्यरत महिलाओं में सामाजिक सुरक्षा योजनाओं की जानकारी का अध्ययन करना।

परिकल्पना–

- वैश्वीकरण के दौर में कार्यरत महिलाओं की प्रस्थिति एवं भूमिका में परिवर्तन आया है।

[1] स्रोत: https://pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=1834404

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 02, Issue 12, December 2023

- वैश्वीकरण के दौर में कार्यरत महिलाओं की पारिवरिक स्तिथि में सुद्रढ़ हुई है।
- वैश्वीकरण के दौर में कार्यरत महिलाओं के साथ कार्यस्थल पर दुर्व्यवहार होने पर प्रतिक्रिया कर रही हैं।
- वैश्वीकरण के दौर में कार्यरत महिलाओं को सामाजिक सुरक्षा योजनाओं की जानकारी है।

शोध विधि– प्रस्तुत शोध झांसी नगर के शहरी क्षेत्र पर आधारित है। झांसी को वर्तमान में प्रशासनिक दृष्टि से 60 वार्डों में बांटा गया है। 60 वार्डों में से अध्ययन हेतु 6 वार्डों का चयन किया गया है। चयनित वार्डो से 50–50 महिलाओं का चयन किया गया है। इस प्रकार कुल 300 उत्तरदाताओं का चयन शोध हेतु किया गया है।

प्रस्तुत शोध में वर्णनात्मक शोध प्ररचना का प्रयोग किया गया है। इस शोध में इकाइयों का चयन दैव निदर्शन विधि द्वारा किया गया है। इस अध्ययन में आंकड़ो के संकलन के रूप में प्राथमिक और द्वितीयक दोनों स्रोतों का प्रयोग किया गया है। आंकड़ों के संकलन के लिए साक्षात्कार अनुसूची विधि का प्रयोग किया गया है।

रोजगार में नियोजन की स्थिति

तालिका संख्या-1

अभिकथन	संख्या	प्रतिशत
हाँ	92	30.7
नहीं	208	69.3
कुल	**300**	**100**

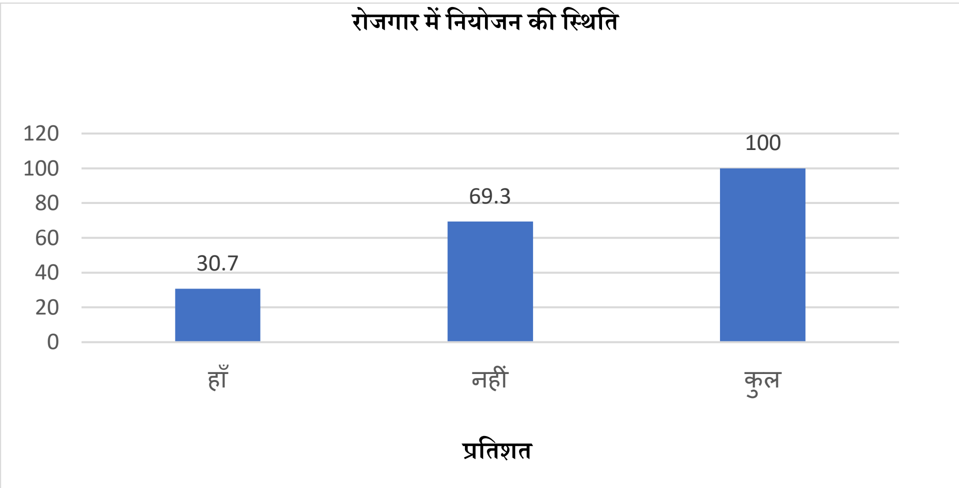

तालिका संख्या-1 उत्तरदाताओं के रोजगार में नियोजन की स्थिति से सम्बंधित है. उपरोक्त तालिका के तथ्यों से स्पष्ट है कि 92 (3.7%) उत्तरदाता रोजगार में नियोजित हैं और 208 (69.3%) उत्तरदाता रोजगार में

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 02, Issue 12, December 2023

नियोजित नहीं हैं. अतः तालिका से स्पष्ट है कि सर्वाधिक (69.3%) उत्तरदाता रोजगार में नियोजित नहीं हैं.

तालिका क्रमांक-2

रोजगार में नियोजित होनें की स्थिति में रोजगार का स्वरूप

(उत्तरदाताओं की कुल संख्या-92)

अभिकथन	संख्या	प्रतिशत
स्वरोजगार	25	27.17
सार्वजनिक	50	54.34
अर्द्ध सरकारी	17	18.47
कुल	**92**	**100**

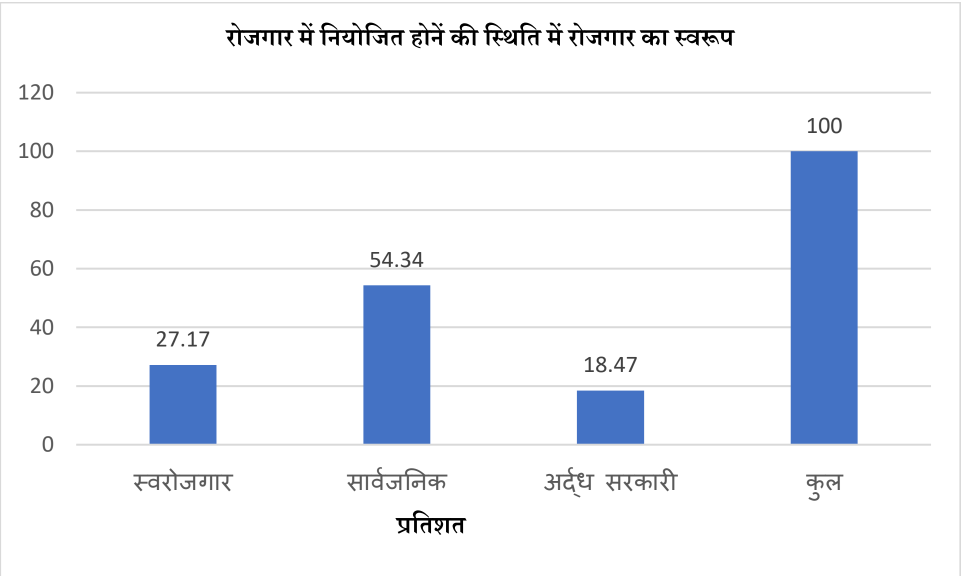

तालिका संख्या-2 उत्तरदाताओं का रोजगार में नियोजित होनें की स्थिति से सम्बन्धित है.उपरोक्त तालिका के तथ्यों से स्पष्ट है कि 25 (27.17%) उत्तरदाता स्वरोजगार में नियोजित हैं, 50 (54.34%) सार्वजनिक क्षेत्र में और 17 (18.47%) अर्द्ध सरकारी नियोजित हैं.अतः तालिका से स्पष्ट है कि अधिकांश उत्तरदाता 50 (54.34%) सार्वजनिक क्षेत्र में नियोजित हैं.

तालिका क्रमांक-3

रोजगार न करने के कारण की स्थिति

अभिकथन	संख्या	प्रतिशत
आप स्वयं नहीं करना चाहतीं	23	11.06

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 02, Issue 12, December 2023

परिवार से अनुमति नहीं दी जाती	53	25.48
बच्चों का पालन-पोषण के कारण	132	63.46
कुल	**208**	**100**

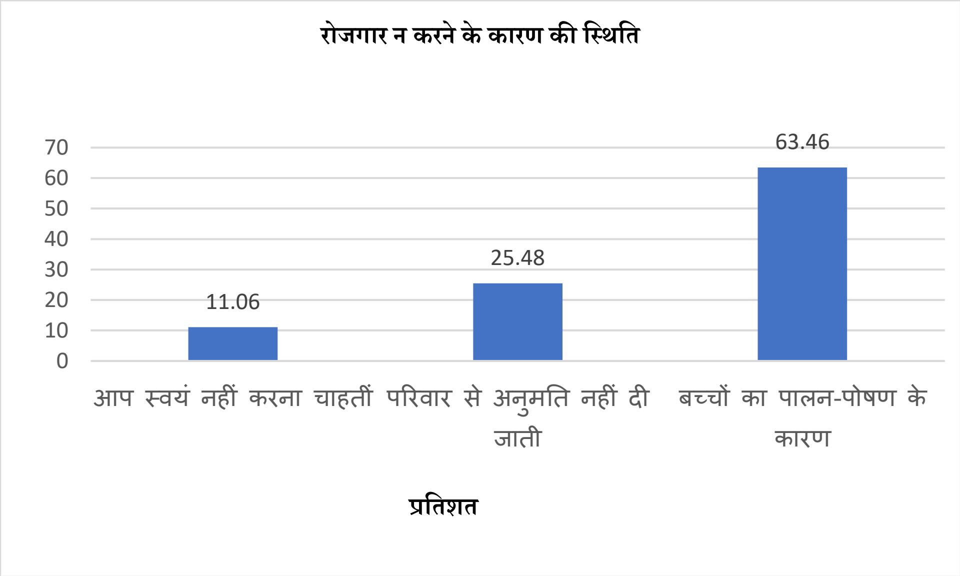

तालिका संख्या-3 उत्तरदाताओं का रोजगार न करने के कारण की स्थिति से सम्बन्धित है. उपरोक्त तालिका के तथ्यों से स्पष्ट है कि 23 (11.6%) उत्तरदाता रोजगार स्वयं नहीं करना चाहतीं, 53 (25.48%) को परिवार से अनुमति नहीं दी जाती और 132 (63.46%) उत्तरदाता बच्चों के पालन-पोषण के कारण रोजगार नहीं करना चाहती .अतः तालिका से स्पष्ट है कि अधिकांश (63.86%) उत्तरदाताबच्चों के पालन-पोषण के कारण रोजगार नहीं करना चाहती.

तालिका क्रमांक-4

रोजगार में नियोजित होने की स्थिति में मासिक आय

अभिकथन	संख्या	प्रतिशत
10,000-20,000	42	45.65
21,000-40,000	22	23.91
41,000-50,000	12	13.04
51,000 से अधिक	16	17.39
कुल	**92**	**100**

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 02, Issue 12, December 2023

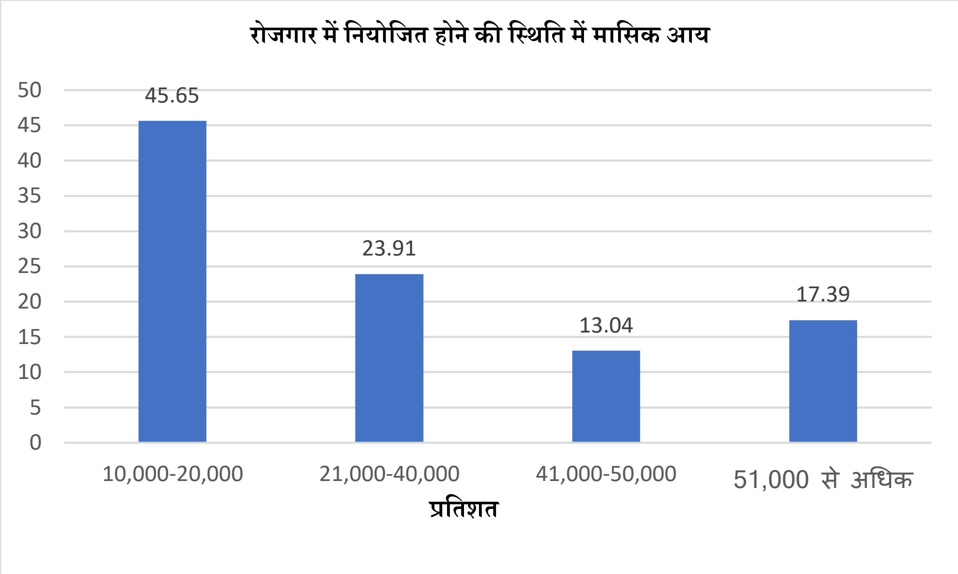

तालिका संख्या-4 उत्तरदाताओं का रोजगार में नियोजित होने की स्थिति में मासिक आय से सम्बन्धित है.उपरोक्त तालिका के तथ्यों के विश्लेषण से स्पष्ट है कि 42 (45.65%) उत्तरदाताओं की मासिक आय 10,000-20,000 के मध्य है, 22 (23.91%) उत्तरदाताओं की 21,000-40,000 के मध्य, 12 (13.04%) उत्तरदाताओं की 41,000-50,000 के मध्य और 16 (17.39%) उत्तरदाताओं की मासिक आय 51,000 से अधिक है. अतः तालिका से स्पष्ट है कि सर्वाधिक (45.65%) उत्तरदाताओं की मासिक आय 10,000-20,000 के मध्य है.

तालिका क्रमांक-5

मासिक आय का आवश्यकता के अनुकूल होने की स्थिति

अभिकथन	संख्या	प्रतिशत
हाँ	74	24.7
नहीं	18	6.0
कुल	**92**	**100**

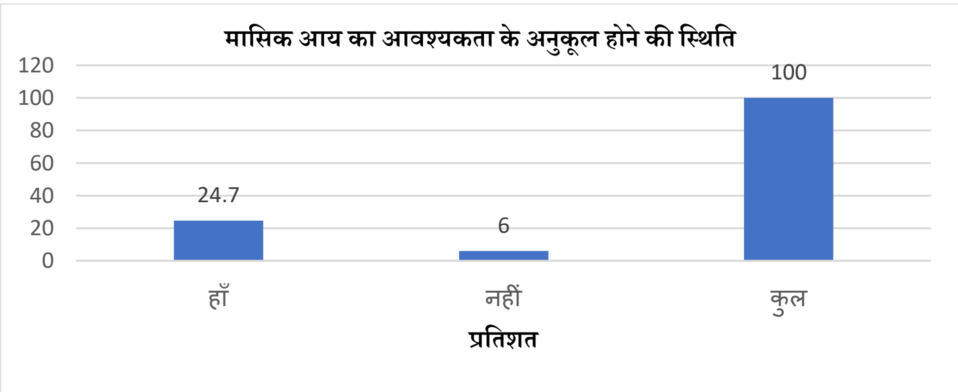

तालिका संख्या-5 उत्तरदाता की मासिक आय का आवश्यकता के अनुकूल होने की स्थिति से सम्बन्धित है. उपरोक्त तालिका के तथ्यों से स्पष्ट है कि 74 (24.7%) उत्तरदाताओं की मासिक आय आवश्यकता के

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 02, Issue 12, December 2023

अनुकूल है और 18 (6.0%) उत्तरदाताओं की मासिक आय आवश्यकता के अनुकूल नहीं है.अतः तालिका से स्पष्ट है कि सर्वाधिक (24.7%) उत्तरदाताओं की मासिक आय आवश्यकता के अनुकूल है.

तालिका क्रमांक-6

रोजगार करने के निर्णय की स्थिति

अभिकथन	संख्या	प्रतिशत
स्वयं का	90	97.82
अन्य का (पति/ माता-पिता/भाई)	2	2.17
कुल	**92**	**100**

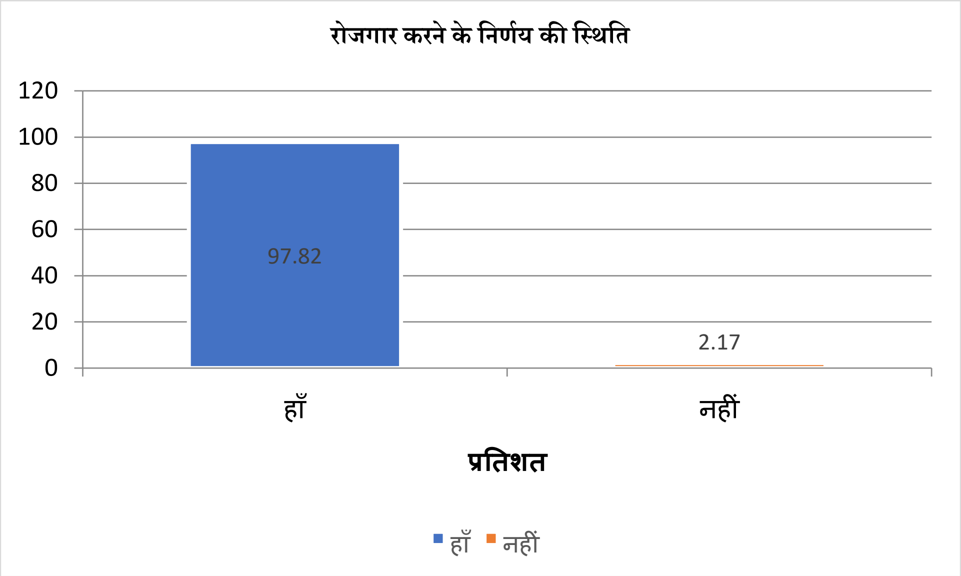

तालिका संख्या-6 उत्तरदाताओं के रोजगार करने के निर्णय की स्थिति से सम्बन्धित है.उपरोक्त तालिका के तथ्यों से स्पष्ट है कि 90 (97.82%) उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया कि रोजगार करने का निर्णय स्वयं का था और 2 (2.17 %) उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया कि रोजगार करने का निर्णय स्वयं का नहीं था.अतः तालिका से स्पष्ट है कि सर्वाधिक (97.82%) उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया है कि रोजगार करने का निर्णय स्वयं उत्तरदाताओं का था.

तालिका क्रमांक-7

रोजगार न करने का निर्णय था

अभिकथन	संख्या	प्रतिशत
पिता का	4	1.92
पति का	204	98.07
कुल	**208**	**100**

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 02, Issue 12, December 2023

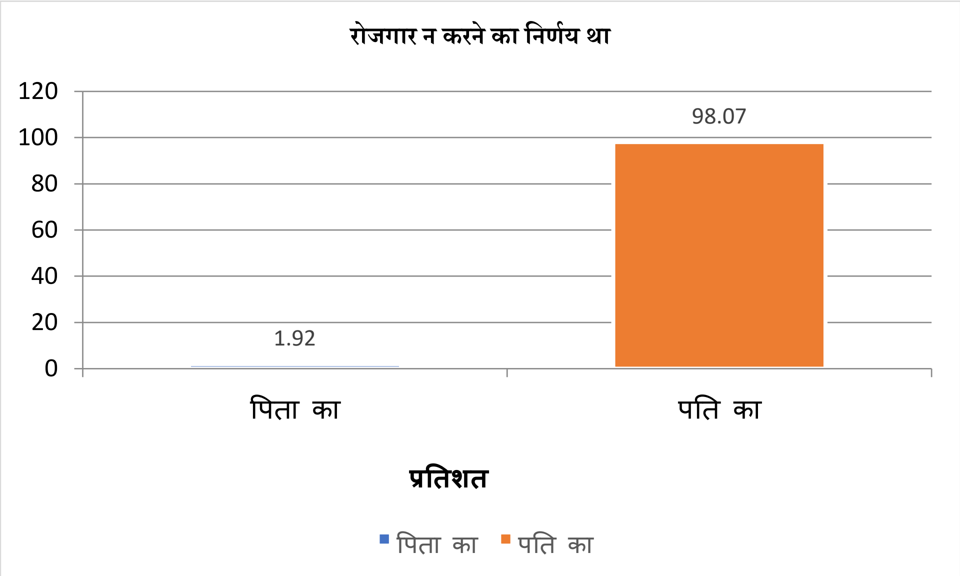

तालिका संख्या-7 उत्तरदाताओं के रोजगार न करने के निर्णय से सम्बन्धित है.उपरोक्त तालिका के तथ्यों से स्पष्ट है कि 4 (1.92%) उत्तरदाताओं के रोजगार न करने का निर्णय उत्तरदाताओं के पिता का था, 204 (98.7%) उत्तरदाताओं के रोजगार न करने का निर्णय उत्तरदाताओं के पति का था.अतः तालिका से स्पष्ट है कि सर्वाधिक (98.7%) उत्तरदाताओं के रोजगार ना करने का निर्णय उत्तरदाताओं के पति का था.

तालिका क्रमांक-8

रोजगार और पारिवारिक भूमिका में संतुलन करने की स्थिति

अभिकथन	संख्या	प्रतिशत
हाँ	84	91.30
नहीं	8	8.69
कुल	**92**	**100**

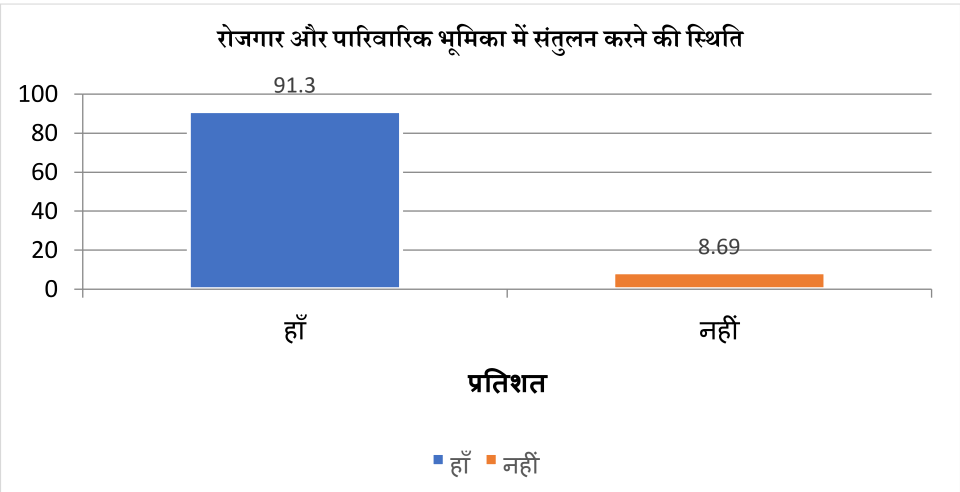

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 02, Issue 12, December 2023

तालिका संख्या-8 उत्तरदाता का रोजगार और पारिवारिक भूमिका में संतुलन करने की स्थिति से सम्बन्धित है. उपरोक्त तालिका के तथ्यों के विश्लेषण से स्पष्ट है कि 84 (91.30%) उत्तरदाता रोजगार और पारिवारिक भूमिका में संतुलन स्थापित कर लेती है और 8 (8.69%) उत्तरदाता रोजगार और पारिवारिक भूमिका में संतुलन स्थापित नहीं कर पाती है. अतः तालिका से स्पष्ट है कि सबसे आधिक (91.30%) उत्तरदाता रोजगार और पारिवारिक भूमिका में संतुलन स्थापित कर लेती है.

तालिका क्रमांक-9

नियोजित उत्तरदाताओं के साथ परिवार द्वारा घरेलू कार्यों में सहयोग की स्थिति

अभिकथन	संख्या	प्रतिशत
हाँ	78	84.78
नहीं	14	15.21
कुल	**92**	**100**

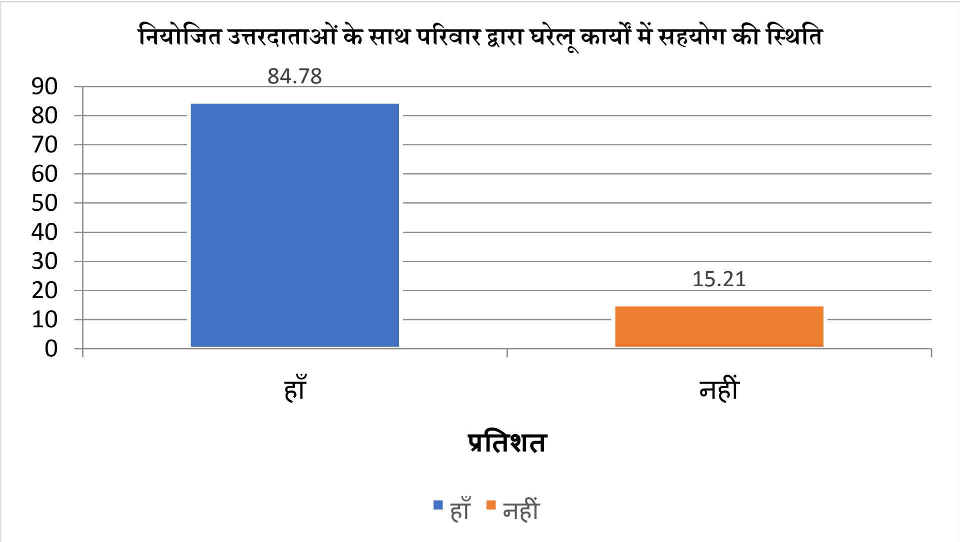

तालिका संख्या-9 नियोजित उत्तरदाताओं के साथ परिवार द्वारा घरेलू कार्यों में सहयोग की स्थिति से सम्बन्धित है. उपरोक्त तालिका के तथ्यों के विश्लेषण से स्पष्ट है कि 78 (84.78%) उत्तरदाताओं को परिवार द्वारा घरेलू कार्यों में सहयोग प्राप्त होता है और 14 (15.21%) उत्तरदाताओं को परिवार द्वारा घरेलू कार्यों में सहयोग नहीं प्राप्त होता है.इस प्रकार स्पष्ट है कि सर्वाधिक (84.78%) उत्तरदाताओं को रोजगार में नियोजित होने के कारण परिवार द्वारा घरेलू कार्यों में सहयोग मिलता है.

तालिका क्रमांक-10

सहयोग प्राप्त होने की स्थिति

अभिकथन	संख्या	प्रतिशत
अंशतः	34	43.58
पूर्णतः	44	56.41

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 02, Issue 12, December 2023

कुल	**78**	**100**

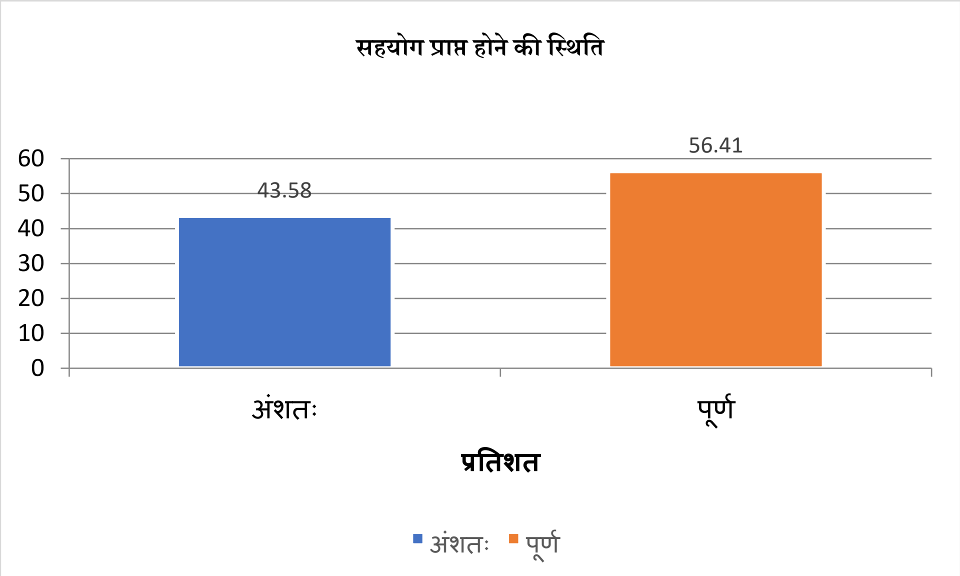

तालिका संख्या-10 उत्तरदाताओं को रोजगार में नियोजित होने के कारण परिवार द्वारा घरेलू कार्यों में सहयोग प्राप्त होने की स्थिति से सम्बंधित है.दी हुई सारणी के तथ्यों के विश्लेषण से स्पष्ट है कि 34 (43.58%) उत्तरदाताओं को परिवार द्वारा घरेलू कार्यों में अंशतः सहयोग मिलता है और 44 (56.41%) उत्तरदाताओं को पूर्णतः सहयोग मिलता है. अतः तालिका से स्पष्ट है कि सर्वाधिक (56.41%) उत्तरदाताओं को घरेलू कार्यों में परिवार का पूर्णतः सहयोग मिलता है.

तालिका क्रमांक-11

नियोजित स्थान पर उत्तरदाताओं के साथ दुर्व्यवहार की स्थिति में प्रतिक्रिया

अभिकथन	संख्या	प्रतिशत
अनुचित व्यवहार का विरोध करेंगी।	42	62.68
पति या ससुरालीजनों से कहेंगी।	1	1.49
पहले शांति से और बाद में आवश्यकता हो तो कानून की मदद लेंगी	22	32.83
पुलिस को शिकायत दर्ज करायेंगी।	2	2.98
कुल	67	100

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 02, Issue 12, December 2023

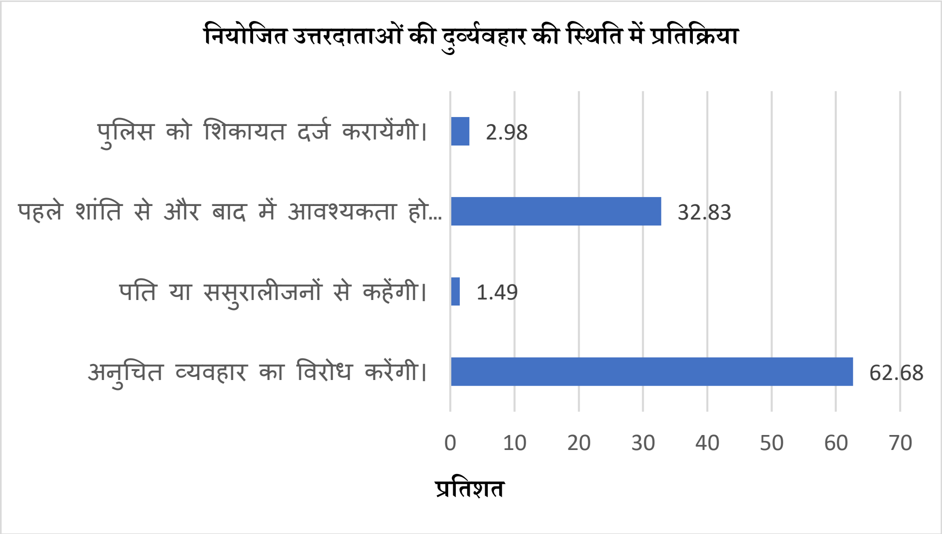

तालिका संख्या-11 नियोजित स्थान पर उत्तरदाताओं के साथ दुर्व्यवहार की स्थिति में प्रतिक्रिया से सम्बन्धित है. सारणी के तथ्यों के विश्लेषण से स्पष्ट है कि 34 (43.58%) नियोजित उत्तरदाता नियोजन स्थान पर होने वाले दुर्व्यवहार की स्थिति में अनुचित व्यवहार का विरोध करेंगी, 1 (1.49%) उत्तरदाता पति या ससुरालीजनों से कहेंगी, 22 (32.83%) उत्तरदाता पहले शांति से और बाद में आवश्यकता हो तो कानून की मदद लेंगी और 2 (2.98%) उत्तरदाता पुलिस को शिकायत दर्ज करायेंगी.कोई भी उत्तरदाता समाज के डर से बात को नहीं दबायेंगी और अपने व्यक्तिगत फैसलों को पारिवारिक दबाव में आकर नहीं बदलेंगी. अतः तालिका से स्पष्ट है कि सर्वाधिक (43.58%) उत्तरदाता अनुचित व्यवहार का विरोध करेंगी.

संदर्भ सूची-

1. मुखर्जी रवीन्द्रनाथ डॉ एण्ड अग्रवाल भारत डॉ, "सामाजिक परिवर्तन एवं सामाजिक आन्दोलन", (2022), एस.बी.पी.डी.पब्लिकेशन्स, प्रष्ठ संख्या 114-115
2. परमार शुभ्रा, "नारीवादी सिद्धांत और व्यवहार" (2021), ओरियंट ब्लैकस्वान प्राइवेट लिमिटेड हैदराबाद, प्रष्ठ संख्या 142-144
3. मुखर्जी रवीन्द्रनाथ डॉ एण्ड अग्रवाल भारत डॉ, "सामाजिक परिवर्तन एवं सामाजिक आन्दोलन" (2022), एस.बी.पी.डी.पब्लिकेशन्स, प्रष्ठ संख्या 122
4. **https://pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=1834404**
5. आहूजा राम, (2013), भारतीय सामाजिक व्यवस्था, रावत पब्लिकेशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या 91-97.
6. स्रोत: **https://pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=1834404**
7. सिंह एन.वी, सिंह जनमेजय, नारीवाद (2018), रावत पब्लिकेशन, जयपुर। पृष्ठ संख्या 42-44
8. श्री वास्तव.एन.डी.डॉ, अनुसंधान विधियाँ, साहित्य प्रकाशन, आगरा, प्रष्ठ संख्या 19-17
9. आहूजा राम, ‘सामाजिक अनुसंधान" रावत पब्लिकेशन, जयपुर, (2014) प्रष्ठ संख्या 138